अलंकार

⇒ अलंकार दो शब्दों - 'अलम्' तथा 'कार' के मिलने से बना है। 'अलम' का अर्थ है - सजावट। अर्थात जो अलंकृत या भूषित करे वही अलंकार है। जिस प्रकार आभूषण शरीर की शोभा बढ़ाता है, वैसे ही अलंकार के प्रयोग से काव्य में चमत्कार, सौन्दर्य और आकर्षक उत्पन्न हो जाता है।

• अलंकार के भेद :-
1. शब्दालंकार
2. अर्थालंकार

→ शब्दालंकार : "जब शब्द के प्रयोग के आधार पर चमत्कार उत्पन्न हो तो उसे शब्दालंकार कहा जाता है।"
इसके भेद :-
1. अनुप्रास
2. यमक
3. श्लेष

→ अर्थालंकार : "जब अर्थ के कारण रचना में चमत्कार उत्पन्न हो तो उसे अर्थालंकार कहते हैं। इसके भेद हैं :-
1. उपमा
2. रूपक
3. अतिशयोक्ति

• अनुप्रास : जहाँ एक ही वर्ण की आवृत्ति बार-बार हो, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है, जैसे :-

१. रघुपति राघव राजाराम ('र' वर्ण की आवृत्ति)
२. नदी निर्झर और नाले
इन वनों ने गोद पाले। ('न' वर्ण की आवृत्ति)
३. चँदू के चाचा ने, ('च' वर्ण की
चँदू की चाची को आवृत्ति)
चाँदनी चौक में, चटनी चटाई ॥

• यमक : जहाँ एक शब्द की आवृत्ति दो या दो से अधिक बार होती है, परन्तु उनके अर्थ अलग-अलग होते हैं, वहाँ यमक अलंकार होता है। जैसे :-

१. कनक, कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।
वा खाये बौराए नर, या पाए बौराय ॥1॥

* यहाँ कनक शब्द दो बार प्रयोग हुआ है, दोनों के अर्थ भिन्न-भिन्न हैं - धतूरा और सोना

२. काली घटा का घमंड घटा ॥2॥

* यहाँ 'घटा' शब्द दो बार आया है और दोनों ही बार उसके अर्थ भिन्न-भिन्न हैं।

PAGE NO.:
DATE: / /

1. घटा - बादल 2. घटा - कम हो गया।

3. तीन बेर खाती थी, वो तीन बेर खाती है ॥3

* यहाँ 'बेर' शब्द दो बार आया है और दोनों ही बार उसके अर्थ भिन्न-भिन्न हैं।

1. बेर - एक प्रकार का फल
2. बेर - तीनों समय

• श्लेष : जहाँ एक शब्द का एक ही बार प्रयोग होता है, परंतु उसके अर्थ अनेक होते हैं, वहाँ श्लेष अलंकार होता है; जैसे -

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती मानुष चून ॥1॥

* इस उदाहरण में 'पानी' के तीन अर्थ हैं - चमक (मोती के लिए), प्रतिष्ठा (मनुष्य के लिए) तथा जल (आटे के लिए

"मेरी भव बाधा हरौ राधा नागरि सोय।
जा तन की झाँई परे स्याम हरित दुति होय॥"

* उपर्युक्त दोहे में 'स्याम' और 'हरित' के अनेक अर्थ हैं :-

स्याम = कृष्ण, नीला, पाप।

हरित = हरा, फीका, हर लिया।

उपमा अलंकार :- उपमा का अर्थ है 'समानता'। जहाँ एक वस्तु ~~की तुलना दूसरी से~~ ~~न करके~~ को दूसरी वस्तु के समान बताया जाता है, वहाँ उपमा अलंकार होता है; जैसे -

"हाय फूल सी कोमल बच्ची, हुई राख की थी ढेरी।"

* उपर्युक्त वाक्यांश में कोमल बच्ची की तुलना 'फूल' से की गई है, अतः यहाँ उपमा अलंकार है।

अन्य उदाहरण :-

१. पीपर पात सरिस मन डोला।
२. मुख बाल रवि सम लाल।

पहचान :- सा, सी, से, सम, सरिस आदि शब्दों का अधिकांशतः प्रयोग होता है।

रूपक अलंकार :- जहाँ गुण की अत्यंत समानता के कारण उपमेय पर उपमान का आरोप किया जाए वहाँ रूपक अलंकार होता है। यह आरोप कल्पित होता है। इसमें उपमेय और उपमान में भिन्नता होने पर भी दोनों साथ-साथ विद्यमान रहते हैं।

DATE: / /

चरण कमल बन्दौ हरि राई।

* इसमें 'चरण' (उपमेय) पर 'कमल' (उपमान) का आरोप हुआ है। अत: यहाँ रूपक अलंकार है।

अन्य उदाहरण :-

1. मैया मैं तो चंद्र खिलौना लैहूँ।
2. पायो जी मैंने राम-रत्न धन पायो।

• उत्प्रेक्षा अलंकार :- जहाँ पर उपमेय में उपमान की सम्भावना की जाए, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इसमें प्राय: मनु, जनु, मानो, जानो, निश्चय जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है : जैसे -

सोहत ओढ़े पीत पट श्याम सलोने गात।
मनो नीलमनि-सैल पर, आतपु पर्यो प्रभात॥

* यहाँ पर बताया गया है कि, श्रीकृष्ण पीताम्बर पहने हुए हैं, उनके शरीर को देखकर ऐसा लगता है (मानो) नील पर्वत पर प्रभात के सूर्य का (पीले रंग का) प्रकाश पड़ रहा हो। यहाँ उपमेय (श्रीकृष्ण) में उपमान (नील पर्वत पर सूर्य का प्रकाश) की सम्भावना की गयी है। यह मनो शब्द से प्रकट हो रहा है।

PAGE NO.:
DATE: / /

• अतिशयोक्ति :- जब किसी वस्तु या बात का बहुत बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जाता है, तो वहाँ 'अतिशयोक्ति अलंकार' होता है; जैसे -

"राणा ने सोचा इस पार, तब तक घोड़ा था उस पार"

* उपर्युक्त वाक्यांश में 'राणा' के सोचने तक घोड़ा उस पार निकल गया, कहना अतिशयोक्ति है।

अन्य उदाहरण :-

१. देख लो साकेत नगरी है यही, स्वर्ग से मिलने गगन को जा रही।

२. हाथ में तलवार देखी वीर के तो, सैकड़ों हाथी गिरे बेहोश होकर॥

• मानवीकरण अलंकार :- जब किसी निर्जीव वस्तु का वर्णन सजीव वस्तुओं की तरह किया जाता है, तो उसे 'मानवीकरण अलंकार' कहते हैं; जैसे -

"सागर के ऊपर नाच-नाच करती हैं लहरें मधुर गान"

* यहाँ पानी की लहरों को सजीव दिखाया गया है, अतः मानवीकरण अलंकार।

अन्य उदाहरण :-

१. मेघ आए बड़े बन-ठन के, सँवर के।

अलंकार	कविता में पहचान
अनुप्रास	वर्णों की आवृत्ति
यमक	अलग अर्थ में एक शब्द की बार-बार आवृत्ति
श्लेष	प्रयोग एक बार लेकिन अर्थ में विविधता
उपमा	वस्तु की समानता
रूपक	एक वस्तु के बदले दूसरे को रखना
उत्प्रेक्षा	उपमेय में उपमान की सम्भावना
अतिशयोक्ति	बढ़ा-चढ़ाकर किया गया वर्णन
मानवीकरण	निर्जीव वस्तु का वर्णन सजीवों की तरह करना